भाभी के साथ रंग

होली मे सब पर पड़े गुलाल,
ओ गुलाल से धरती लाल।
ठंढ़ी बयार उसपर बिखरे बाल,
कसमसाती बदन मचलते चाल।।

रंग छुपाये भाभी, बनाये अनोखे ढ़ाल,
मीठी बातों ने किया कमाल।
मुस्कुराती अदा मे रंग दी डाल।।

निकली बगल से, मानो निकल हो चमन से।
हँसी की गुवार, मौसम हुआ खुशगवार।।

भाभी अब भी थी हमले को तैयार,
आखिर देवरजी मानो हार।
कहो भाभी की जय हो,
जो भाभी चाहे वही तय हो।।

रंगो गाल या, भिंगाओ बाल,.....→...2

मत पुछो कोई सवाल।.....←.....1
जब है कमाल ही कमाल,
अनोखे जादु पे हम भी है वेहाल।।
जहाँ डालना है डाल,
खुद को तो सम्भाल।
निखर गई परी,
डुब गई खरी-खरी।।
छुपकर बोली, मेरी भी बन गई टोली,
अब बन्द होगी आँख मिचोली।
भाभी बोली होली है भाई होली।।
रंग का कमाल, देखो इनके हाल,
दिखते भी नहीं इनके कोई बाल।
भाभी बनी पतंग, देख देवर के ढ़ंग,
खत्म हुई जंग,ये कैसा है रंग।।
भींगे चोली भींगे बदन,
न देखी कभी इतनी उमंग।.....→...3

ज्वार में लहरो का तरंग,.....←.....2
अपनो मे खुशीयो का मतंग।।
मुस्काये, तकरीब लगाये,
मानो वन के पंछी।
हँसे और खिलखिलाये।।
उन्मुक्त गगन, गहरे सागर झील।
प्रकृति के श्रृगार से, खिलतें है फुल।।
गाओ होली, सुनाओ होली,
खेलो होली, खेलाओ होली।
होली रे होली, होली रे होली,
मै तो तेरी रंग, मे हो ली।।
एक चाल, एक रंग,
सवके भिंगे अंग-अंग।
भुले गम, रहे संग-संग,
खिले मन के उमंग।
होली रे होली, होली रे होली।।
लेखक एवं प्रेषकः-अमर नाथ साहु